Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

मानस के संदर्भित भाव -डॉ जयशंकर शुक्ल

डॉ. जय शंकर शुक्ल

विषय विशेषज्ञ, कोर एकेडमिक यूनिट, परीक्षा शाखा, शिक्षा विभाग, शिक्षा निदेशालय, पुराना सचिवालय राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली।

Article Info
Volume 5, Issue 2
Page Number : 16-22

Publication Issue :
March-April-2022

Article History
Accepted : 15 March 2022
Published : 30 March 2022

शोध सारांशिका - श्री रामचरित मानस गोस्वामी तुलसीदास द्वारा लिखित सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इस ग्रंथ में जीवन के बहुत सारे रहस्य और प्रक्रिया गत सत्य को आकार देने का काम किया गया है। यहां पर जीवन जीने के तरीके को स्पष्ट करने के लिए रचनाकार ने विविध संदर्भों को ग्रहण करके अपनी बात को करने का प्रयत्न किया है । साथ ही साथ गोस्वामी तुलसीदास जी का आग्रह है, कि हम जीवन जीने के लिए जब कभी भी सत्य के प्रति आग्रही होकर आगे की ओर बढ़ने का यत्न कर रहे हो तो ऐसे समय में हमें चाहिए कि हम तमाम अंतरविरोधों को एक तरफ रख कर के सच्चे मन से पवित्र आचरण का आश्रय लेकर आत्म साक्षात्कार की ओर आगे बढ़े। इस क्रम में हमें संसार में जीते हुए ही कमल के पत्ते की तरह जल से लिप्त न होने के सदृश जीवन यापन करना होगा। वास्तव में मानस जन सामान्य के साथ-साथ संतों का भी ग्रंथ है। संत से हमारा तात्पर्य जिसके शंकाओं का अंत हो गया। हम सभी संत बनने की प्रक्रिया में बढ़ते हुए निरंतर उस परम सत्य की खोज में लगे रहते हैं। हमारा अनुसंधान जैसे ही पूरा होता है, हम मौन हो जाते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी का श्रीरामचरितमानस इस अनुसंधान में हमारा सबसे बड़ा मार्गदर्शक है, ऐसा मेरा प्रबलमत है। प्रस्तुत शोध आलेख में इसी बात को बड़े ही भावपूर्ण तरीके से श्री रामचरितमानस की चौपाइयां और लोगों को लेकर स्पष्ट करने का प्रयास है।

बीज शब्द - व्याख्या, आशय, विवेचन, प्रासंगिक, प्रकरण, दृष्टिकोण, वक्तव्य, प्रशिक्षण, वातावरण, मानदंड, सकारात्मक, तात्पर्य, चौपाई, दोहा, सोरठा, छंद, वर्णन एवं विश्लेषण।

हम आज श्रीरामचरितमानस के एक प्रकरण के आधार को स्पष्ट करने का प्रयत्न करते हैं ,जहां पर गोस्वामी तुलसीदास द्वारा कुछ बातें स्पष्ट करने का यत्न किया गया है । वह यत्न कवि के द्वारा अपने मानदंडों पर किया गया है लेकिन पाठक के द्वारा पाठक के अपने दृष्टिकोण को लेते हुए उसके मानदंड बदल जाते हैं । इस तरह हम देखते हैं कि आपसी विमर्श में हमारे सामने जो बात निकल कर आती है उसमें उस आधार को जानना और समझना बेहद जरूरी है जिसके आधार पर यह बातें कही गई है और जिसके आधार पर इनका अर्थ किया जाना चाहिए। सामान्यत: किसी भी वक्तव्य का

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

अर्थ करने के संदर्भ में हमें यह ध्यान रखना होता है कि उसका अपना जुड़ाव, उसका अपना आधार तथा उसका अपना संदर्भ कहां से उसे जोड़ता है।

यहां पर भाषा ,भाव और विचार तीनों महत्वपूर्ण है । अर्थ के लिए प्रत्यक्ष, अनुमान और प्रमाण भी अत्यंत आवश्यक होते हैं। जब हम उक्त तीनों की ओर ध्यान देते हैं और उनके अंतर्संबंधों पर अपने विचार व्यक्त करने का प्रयत्न करते हैं , तो कवि के द्वारा मनोभाव को जानना और उस पर अपने आप को अभिव्यक्त करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। यहां गोस्वामी तुलसीदास द्वारा सुंदरकांड में कही गई एक चौपाई के अंश पर अपनी बात रखने का प्रयत्न करता हूं। वस्तुत: चौपाई ,दोहा ,सोरठा, छंद के साथ-साथ श्लोकों का भी प्रयोग गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस के लेखन में किया है। तत्कालीन समाज की अवधारणा को भी बहुत ही तरीके से व्यक्त करने का एक सकारात्मक कदम यहां पर दिखाई पड़ता है। श्री रामचरितमानस के सुंदरकांड मैं मानस कार द्वारा एक चौपाई कही गई है, जो इस तरह है-

ढोल गवार शुद्र पशु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी।।*[1] श्रीरामचरितमानस,सुंदरकांड, लेखक -गोस्वामी तुलसीदास, टीकाकार-हनुमान प्रसाद पोद्दार, प्रकाशक- गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष- 2015

श्रीरामचरितमानस में मानस कार गोस्वामी तुलसीदास स्पष्ट रुप से कहते हैं कि ढोल गंवार शूद्र पशु और नारी यह सभी सिखाए जाने अथवा समझ प्रांतीय जाने अथवा प्रशिक्षण दिए जाने के अधिकारी है अर्थात इनका यह खाकी इन्हें किसी भी परिस्थिति घटना देश काल वातावरण के बारे में अच्छी तरह से व्यवहार बर्ताव एम उचित तिथि शिक्षा दी जाए उसके बारे में बताया जाए जिससे कि इनका व्यवहार इनका बताओ इनका प्रस्तुतीकरण उसके अनुरुप हो। वस्तुत: इस चौपाई में जो आधार प्रस्तुत किए गए हैं, वह है ढोल, गवार, शूद्र, पशु और नारी। यह 5 अवयव इसके होते हैं।दिए गए इन पांचों अवयवों के आधार ही शब्द के अर्थ, औचित्य, व्याख्या,आशय तथा विवेचन किए जाना ज्यादा प्रासंगिक होते हैं।

दरअसल..... ताड़ना एक अवधी भाषा का शब्द है..... जिसका अर्थ .... पहचानना .. परखना ,सीखना ,सिखाना या रेकी करना होता है.....!

इन पांचों के लिए जो एक शब्द का प्रयोग किया गया है , वह शब्द है ताड़ना। हम इस शब्द पर ही पहले आते हैं कि ताड़ना का अर्थ क्या होता है। जब ताड़ना शब्द का अर्थ निकालने की ओर हम आगे बढ़ते हैं तो सबसे पहले हमें यह ध्यान देना होता है कि ताड़ना किस भाषा का शब्द है। श्री रामचरितमानस किस भाषा में लिखी गई है। इसलिए जब हम किसी भी शब्द का अर्थ करने की और आगे बढ़े तो निश्चित तौर पर हमें यह ध्यान रखना होगा कि हम इसके मूल में जाए अर्थात जिस भाषा में लिखी गई है उस भाषा के आधार पर इसका अर्थ करने का प्रयत्न किया जाए।

जब हम भाषा के आधार पर इसका अर्थ करते हैं तो निश्चित तौर पर हमें वहां पर प्रचलित आंचलिक मान्यताओं की ओर देखना होता है। अवधी भाषा के मूल में इस शब्द का अर्थ करते हुए हम यह देखते हैं वहां पर यह कहा गया है कि ताड़ना अर्थात ताड़ लेना, जान लेना, सीख लेना, समझ लेना, बता देना, जता देना तथा सिखा देना। आगे निश्चित तौर पर अवधी में हम यह कह सकते हैं कि हमने इस बात को ताड़ लिया,जान लिया समझ लिया सीख लिया या सिखा दिया।

इसके विपरीत कुछ लोग इस चौपाई का और इसके शब्दों का अपनी बुद्धि और अतिज्ञान के अनुसार ..... विपरीत अर्थ निकालकर महाकवि गोस्वामी तुलसी दास जी और उनके महाकाव्य रामचरित मानस पर आक्षेप लगाते हुए अक्सर नकारात्मक रूप से दिखाई पड़ जाते है....!

सबसे पहले इसी ग्रंथ श्रीरामचरितमानस के पूर्व के और पश्चात के प्रसंगों में संदर्भ के अनुसार इसके रचनाकार गोस्वामी तुलसीदास द्वारा वक्तव्य को आधार मानते हैं और देखते हैं कि यह बेहद ही सामान्य समझ की बात है

..... अगर गोस्वामी तुलसी दास जी स्त्रियो से द्वेष या घृणा करते तो.....।

रामचरित मानस में उन्होने स्त्री को देवी समान क्यो बताया...?????

और तो और.... तुलसीदास जी ने तो नारियों के प्रति अपनी भावना का प्रकटन करते हुए उन्हें मातृ संस्था के रूप में स्थापित करते समय उनके बारे में विशद विवेचन जो किया है वह अत्यंत ही पवित्र एवं आदर्श की स्थिति को प्राप्त है

"एक नारि ब्रत रत सब झारी।

ते मन बच क्रम पति हितकारी।"[*2] श्रीरामचरितमानस,सुंदरकांड, लेखक -गोस्वामी तुलसीदास, टीकाकार-हनुमान प्रसाद पोद्दार, प्रकाशक- गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष- 2015

इस चोपाई में गोस्वामी तुलसीदास जी स्पष्ट रुप से कहते हैं कि उस समय के पुरुष की अपने निष्ठा समर्पण एवं लगाओ एक पत्नी व्रत के आधार पर एक ही स्त्री के प्रति होता था और वह उसी में व्रत रहते थे अर्थात उसी में सल्लम संत रहते थे और चित्र नारियों की लिए कहा गया है कि वे भी एक ही पुरुष के प्रति मन वाणी और कर्म से समर्पित धोती थी रखा उसका खंड के जीवन एवं व्यवहार के आधार को दृष्टि का करते हुए यह तस्वीर। अर्थात, मानस कार गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार श्री रामचरितमानस की रचना प्रक्रिया में उस समय के मान्य परंपराओं के आधार पर नारी–पुरुष के विशेषाधिकारों को न मानकर..... उस कॉल खंड में स्त्री पुरुष दोनों को एक निश्चित आधार पर अपने आप को स्थापित करते हुए दोनों को समान रूप से एक ही व्रत पालने का आदेश दिया है।

साथ ही ..... मानस कार के अपने विवरण वर्णन एवं विश्लेषण में श्री रामचरितमानस की नायिका परांबा जगत जननी सीता जी की परम आदर्शवादी महिला एवं उनकी नैतिकता व्यावहारिकता सकारात्मकता स्वीकार्यता एवं सहजता का चित्रण....उर्मिला के विरह वियोग निष्ठा समर्पण और त्याग का चित्रण..... यहाँ तक कि.... लंका से मंदोदरी के अपने परिवार एवं कुल के प्रति जागरूकता अपनी आशंकाओं को लेकर के अपने पति को सावधान करने का कार्य तथा अपनी भूमिका के प्रति सदैव स्वस्थ एवं सजग रहने की आदत और त्रिजटा का उसकी समाज नारी एवं उसकी अस्मिता के प्रति लगाव का चित्रण भी गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार श्री रामचरितमानस में वर्णन सकारात्मक ही है ....!

सिर्फ इतना ही नहीं..... मानस कारने मानस कारने हनुमान जी के समुद्र पार करते समय लंका में प्रवेश के दौरान मिलने वाली महिला लंकिनी हो या उसके पूर्व उनसे मार्ग में मिलने वाली महिला सर्पों की माता सुरसा हो दोनों के प्रति उनका व्यवहार विचार एवं कार्य कहीं ना कहीं उनके आधार को स्पष्ट करता है। सुरसा जैसी देवी को भी हनुमान द्वारा माता

कहना..... मानस कार के अपने विवरण एवं व्याख्यान में भगवान राम के विमाता एवं भरत की माता कैकेई के प्रति उनका लगाव समर्पण सम्मान और मंथरा के प्रति आदर भाव भी तब सहानुभूति का पात्र हो जाती हैं..... जब, उन्हे अपनी ग़लती का पश्चाताप होता है ।

ऐसे में तुलसीदास जी के द्वारा श्री रामचरितमानस में प्रयुक्त शब्द ताड़ना का अर्थ..... स्त्री को पीटना अथवा प्रताड़ित करना है.....आसानी से स्वीकार नहीं होता.....!

ममता रत सन ग्यान कहानी।

अति लोभी सन बिरति बखानी॥

क्रोधिहि सम कामिहि हरिकथा।

ऊसर बीज बएँ फल जथा॥2॥*[3] श्रीरामचरितमानस,सुंदर कांड, लेखक –गोस्वामी तुलसीदास, टीकाकार–हनुमान प्रसाद पोद्दार, प्रकाशक– गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष– 2015भावार्थ:–ममता में फँसे हुए मनुष्य से ज्ञान की कथा, अत्यंत लोभी से वैराग्य का वर्णन, क्रोधी से शम (शांति) की बात और कामी से भगवान् की कथा, इनका वैसा ही फल होता है जैसा ऊसर में बीज बोने से होता है (अर्थात् ऊसर में बीज बोने की भाँति यह सब व्यर्थ जाता है)॥2॥

साथ ही ... हमें मानस कार के दृष्टिकोण को आसानी से समझते हुए इस बात का भी ध्यान रखना आवश्यक है कि.... तुलसी दास जी.....द्वारा अपने कालजई महाकाव्य श्री रामचरितमानस में शूद्रो के विषय मे तो कदापि ऐसा लिख ही नहीं सकते क्योंकि.... उसी मानस में उनके द्वारा अपने प्रिय महानायक प्रिय राम द्वारा शबरी.....निषाद....केवट आदि से मिलन के जो सहज उदाहरण है..... वो तो उनके मंतव्य के प्रति और कुछ ही दर्शाते है .....!

तुलसी दास जीने मानस की रचना अवधी में की है और प्रचलित शब्द ज़्यादा आए हैं, इसलिए "ताड़न" शब्द को संस्कृत से ही जोड़कर नहीं देखा जा सकता..... बल्कि इसका अर्थ करने के लिए हमें उसी आंचलिक भाषा में वहां प्रचलित शब्दावली एवं वहां के दृष्टिकोण को लेकर चलना होगा तभी हम इसका सही अर्थ सही संदर्भ में कर पाएंगे!

फिर, यह प्रश्न बहुत स्वाभिविक सा है कि.... श्री रामचरितमानस के लेखक द्वारा अपने महाकाव्य में वर्णित चौपाई के आधार पर आखिर इसका भावार्थ है क्या....?????

यह प्रकरण अपने आप में बहुत विशिष्ट के और यहां पर अर्थ करने के लिए हमें शब्द के गुण शब्द की शक्तियां व्याकरण चीन ने एवं कथक कत्थक संबंध पर भी ध्यान रखना होगा। इसे ठीक से वास्तविक आधार के साथ समझाने के लिए..... मैं आप लोगों के सामने हिंदी भाषा के एक ऐसे वाक्य का उदाहरण देना चाहूंगा जिसमें आपस में व्याकरण चिन्हों के बदलाव अथवा अक्षरों के हेरफेर से पूरे वाक्य के भावार्थ के बदल जाने का एक उदाहरण देना चाहूँगा .....

मान लेते है कि .....

एक वाक्य है.....

"" भावनात्मक आधार पर असहमत लोगों को कारागार में **बंद रखा गया है** ""

दूसरा वाक्य .... "" भावनात्मक आधार पर असहमत लोगों को कारागार में **बन्दर खा गया है** ""

पहला वाक्य"""""**उसे छोड़ो, मत परेशान करो।**

दूसरा वाक्य """"**उसे छोड़ो मत, परेशान करो**""""

हालाँक ऊपर ऊपर दिए गए दोनों वाक्यों में ... उनके अक्षर समन्वय के साथ व्याकरणिक चिन्हों में पूरी तरह एकरूपता रखने का प्रयास किया गया हैं..... लेकिन.... अक्षरों के साहचर्य एवं व्याकरणिक चिन्हों के स्थान परिवर्तन के आधार पर दोनों वाक्यों के भावार्थ पूरी तरह बदल चुके हैं...!

ठीक ऐसा ही रामचरित मानस की इस चौपाई के साथ हुआ है..... क्योंकि जब हम इस चौपाई का अर्थ करने जाते हैं तो इसके ठीक पहले इसी चौपाई से जुड़ी हुई दूसरी चौपाई को जानना हमारे लिए बहुत जरूरी है जहां पर मानस कार श्री रामचरितमानस के इसी प्रकरण में गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं कि

तव प्रेरित मायाँ उपजाए।

सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए।।[*4] **श्रीरामचरितमानस,सुंदरकांड, लेखक -गोस्वामी तुलसीदास, टीकाकार-हनुमान प्रसाद पोद्दार, प्रकाशक- गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष- 2015**

यह घटना क्रम है एक प्रकरण है प्रस्तुति है जिसमें श्री रामचंद्र जी के कार्य व्यवहार के दृष्टि गत समुद्र स्वयं प्रस्तुत होकर कहते हैं यह प्रभु आपने बहुत अच्छा किया कि मुझे एक सीख प्रधान की एक शिक्षा दिया और इस शिक्षा में यह नियत है कि यह आपके मर्यादा के अनुकूल है अर्थात जब भी हम किसी से कोई अपेक्षा रखें या अपने प्रति अथवा समय समाज के प्रति किसी के व्यवहार बताओ भैया किसी भी तरह की हमारी अपनी कक्षा हो ऐसी स्थिति हमारा दायित्व बनता है कि उसे संबंध यह तो बताओ के बारे में एक आदर्श मानते आधार पर शिक्षक पिया जाए या उसे जागरुक बनाया जाए शिक्षक करने का अभिप्राय वाली यही नहीं है क्या उसको सिखाएं या उसके व्यवहार में इस तरह से परिवर्तन है तू उसके लिए आधार प्रस्तुत करें बल्कि यह हो सकता है कि समय गत अथवा जो हरकत स्थितियों में वह चीज को ना ध्यान कर पा रहा हो तो उसे उसके ध्यान में यह चीज़े लानी भी सीख से संबंधित है और वो सभी तुलसीदास जी ने अपने इस प्रकरण में इस्पात का पूरी तरह से ध्यान रखा है जो पिक्चर।किसी भी जगन लिखे गए प्रकरण में वाक्यों के अंतर्संबंध उनके अर्थ कथन के लिए अत्यंत आवश्यक होते हैं ऐसा नहीं होता कि हम एक शब्द उठा करके उसका स्वतंत्र अर्थ करने की और आगे बढ़े और वास्तव में जो अर्थ वहां जिस रूप में कवि द्वारा स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है उसे बिल्कुल भूल जाएं अगर ताड़ना का अर्थ प्रताड़ना या मारपीट से होता तो उस के संदर्भ में ऊपर के चौपाई में 'सिख' शब्द का प्रयोग क्यों किया जाता सिख शब्द से साफ साफ स्पष्ट होता है कि यहां सीखने ,जानने, बताने और जताने से ही इसका अभिप्राय है।

यहां पर संदर्भ और प्रकरण के साथ-साथ रचनाकार के मंतव्य के अनुसार भी यह ध्यान योग्य बात है कि उन्होंने जो कुछ भी लिखा है या जो कुछ भी कहा है या जो कुछ भी आगे स्पष्ट करने के क्रम में अपनी बात को रखने का यत्न करते हैं उनके विपरीत जाकर.... क्षुद्र मानसिकता से ग्रस्त ऐसे लोगो को..... निंदा के लिए ऐसी पंक्तियाँ दिख जाती है

.... परन्तु उन्हें यह नहीं दिखाई पड़ता है कि ..... उसी श्री रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी के ही अनुसार राजा दशरथ ने स्त्री के वचनो के कारण ही अपनी प्रतिबद्धता को सर्वोपरि रखते हुए तो अपने प्राण दे दिये....

और श्री रामचरितमानस में ही इस महाकाव्य के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार महाकाव्य के नायक श्रीराम ने स्त्री की रक्षा के लिए ही उस कालखंड के परम प्रतापी विद्वान शोधकर्ता रावण से युद्ध किया ....

साथ ही साथ....रामायण वर्णित अपने अपने विषय विचार प्रभाग के प्रत्येक पात्र द्वारा.... पूरी रामायण मे विभिन्न प्रकरणों में अपने विवेचन विश्लेषण एवं विवरण में वर्णनात्मक संवाद का आधार लेकर स्त्रियो का सम्मान किया गया और उन्हें देवी के समान बताया गया ..!

श्रीरामचरितमानस के मूल को देखते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी के लेखन और विचार विनिमय के आधारों पर दृष्टिपात करने के उपरांत हम पाते हैं कि ये चौपाइयां उस समय उस विशेष आधार को लेकर कही गई है जब ... समुन्द्र द्वारा श्री राम की विनय स्वीकार न करने पर जब श्री राम क्रोधित हो गए..... प्रतिक्रिया स्वरूप श्री राम जी ने अपने आप को तैयार किया और समुद्र को सीख देने के लिए अपने तरकश से बाण निकाला ...! यहां यह ध्यान देने की बात है किया बाण सीख देने के लिए ही संधान किया गया अगर ऐसा न होता तो जिस व्यक्ति ने 3 दिन तक हमारे अनुनय विनय को अस्वीकार कर दिया उसके आने के 3 पदों के उपरांत ही हम उसी के मंतव्य के अनुसार उस संधारित तीर का प्रयोग करके उसे अभय दान न दे देते।

तब समुद्र देव .... उस समय के मर्यादा के अनुसार सीख पाकर श्री राम के चरणो मे आए.... और, श्री राम से क्षमा मांगते हुये अनुनय विनय करते हुए कहने लगे कि....

प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई।

सो तेहि भाँति रहें सुख लहई।।*[5] **श्रीरामचरितमानस,सुंदरकांड, लेखक -गोस्वामी तुलसीदास, टीकाकार-हनुमान प्रसाद पोद्दार, प्रकाशक- गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष- 2015**

हे प्रभु – आपने अच्छा किया जो मुझे शिक्षा दी..... और ये ये लोग विशेष ध्यान रखने यानि .....शिक्षा देने के योग्य होते है .... ! यहां पर समुद्र ने बिल्कुल यह नहीं कहा है कि मुझे प्रताड़ित किया गया या मुझे दंडित किया गया है या कष्ट देने का उपक्रम किया गया उसने सीधे सीधे कहा कि मुझे सीख दिया गया तो सीख और ताड़ना दोनों एक दूसरे से जुड़ रहे हैं यहां पर। मानस कार का सहज भाव जो यहां दृष्टिगोचर होता है कि प्रभु संबोधन उसके लिए दिया जाता है जो सब पर समान रूप से अधिकार पूर्व विचार कर सके उसको रास्ता दे सके उसको अपने व्यवहार के प्रति जागरुक सके और ऐसे में समुद्र के द्वारा प्रभु श्री राम से कहना कि आपने मुझे सीख देकर बहुत अच्छा किया और आपके मर्यादा के अनुकूल है निश्चित रूप से समाज में व्याप्त विक्रम और व्यवहार और बताओ को लेकर के चल रहा ग्रहों का ही एक विशिष्ट परिप्रेक्ष्य को प्रदर्शित करता है। यह चौपाई जब हम सब संदर्भ के साथ रख यह तो उसके अर्थ और उसके विचार और विनय सुंदर होते उसका अर्थ और उसके विचार दोनों में हम बहुत अंतर भी पाते हैं।

कनक थार भरि मनि गन नाना।

बिप्र रूप आयउ तजि माना॥*[6] **श्रीरामचरितमानस,सुंदरकांड, लेखक -गोस्वामी तुलसीदास, टीकाकार-हनुमान प्रसाद पोद्दार, प्रकाशक- गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष- 2015**

भावार्थ:-प्रभु ने अच्छा किया जो मुझे शिक्षा (दंड) दी, किंतु मर्यादा (जीवों का स्वभाव) भी आपकी ही बनाई हुई है। ढोल, गँवार, शूद्र, पशु और स्त्री- ये सब शिक्षा के अधिकारी हैं।

रजनीकांत जी, अवधी भाषा में ताड़ना का अर्थ होता है देखना, समझना और समझाना ।

यदि किसी पशु से कोई गलती हो जाये तो उसे सजा नहीं दी जाती क्योंकि वह पशु है । ढोल का प्रयोग यहाँ मुनादी करवाने वाले से हैं.. यानि यदि मुनादी करवाने वाला कोई खबर ऐसी लाता है जो प्रजा को अनुचित लगे, तो उसे सजा नहीं दी जा सकती क्योंकि वह राजाज्ञा लेकर आया है राजा का सन्देश लेकर आया तो जो कुछ भी कहना है, विरोध करना है वह राजा से ही करना चाहिए । शूद्र यानि सेवक से कोई गलती हो जाये तो उसे भी सजा नहीं दी सकती क्योंकि वह आपका सेवक है और उसे समझाया जा सकता है । नारी पुरुष की जन्ननी भी होती है अर्धांगनी भी, बहन भी और साथी भी... तो उससे यदि कोई भूल हो जाए तो उसे भी समझाया ही जाना चाहिए, सजा नहीं दी जा सकती ।

तो उपोरोक्त सभी ताड़ना यानि समझाने के अधिकारी हैं । दूसरा अर्थ यह भी निकलता है कि उन सभी पर नजर रखनी चाहिए ताकि उनसे कोई भूल न हो जाए, कोई ऐसी गलती न कर बैठें जिससे परिवार या समाज या उसका स्वयं ही कोई अहित हो जाए ।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. श्रीरामचरितमानस', लेखक –गोस्वामी तुलसीदास, टीकाकार–हनुमान प्रसाद पोद्दार, प्रकाशक– गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष– 2015
2. श्रीरामचरितमानस', लेखक –गोस्वामी तुलसीदास, टीकाकार–हनुमान प्रसाद पोद्दार, प्रकाशक– गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष– 2015
3. श्रीरामचरितमानस', लेखक –गोस्वामी तुलसीदास, टीकाकार–हनुमान प्रसाद पोद्दार, प्रकाशक– गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष– 2015
4. श्रीरामचरितमानस', लेखक –गोस्वामी तुलसीदास, टीकाकार–हनुमान प्रसाद पोद्दार, प्रकाशक– गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष– 2015
5. श्रीरामचरितमानस', लेखक –गोस्वामी तुलसीदास, टीकाकार–हनुमान प्रसाद पोद्दार, प्रकाशक– गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष– 2015
6. श्रीरामचरितमानस', लेखक –गोस्वामी तुलसीदास, टीकाकार–हनुमान प्रसाद पोद्दार, प्रकाशक– गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष– 2015